भावार्थ पाठ 5 - 'यह दंतुरित मुस्कान' तथा 'फसल' (नागार्जुन) कक्षा 10 हिदी अ

क्षितिज भाग 2 - पद्य खंड

काव्यांशों का भावार्थ

'यह दंतुरित मुस्कान'

काव्यांश 1

तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान
मृतक में भी डाल देगी जान
धूलि-धूसर तुम्हारे ये गात...
छोड़कर तालाब मेरी झोपड़ी में खिल रहे जलजाल
परस पाकर तुम्हारा ही प्राण,
पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण
छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शैफालिका के फूल
बाँस था कि बबूल ?

भावार्थ:

कवि को बच्चे के नए-नए निकले दाँतों की मनमोहन मुस्कान में जीवन का संदेश दिखाई देता है। इसलिए वह कहता है कि हे बालक! तुम्हारे नए-नए निकले दाँतों की मनमोहन मुस्कान तो मेरे हुए व्यक्ति में भी प्राणों का संचार कर देती है अर्थात् इस मुस्कान को देखकर तो जिंदगी से निराश और उदासीन लोगों के हृदय भी प्रसन्नता से खिल उठते हैं।

कवि कहता है कि धूल से सने हुए तुम्हारे इस शरीर को देखकर ऐसा लग रहा है मानो कमल का सुंदर फूल तालाब की छोड़कर मेरी झोपड़ी में आकर खिल गया हो। तुम्हें छूकर पत्थर भी पिघलकर जल बन गया होगा अर्थात् पत्थर दिल वाले व्यक्ति ने जब तुम्हारा स्पर्श किया होगा, तो वह भी पत्थर के समान अपनी कठोरता को छोड़कर विनम्र बन गया होगा। तुम्हारा स्पर्श इतना कोमल है कि बाँस या बबूल से भी शैफालिका के फूल झड़ने लगे होंगो अर्थात् तुम्हारे स्पर्श से कठोर हृदय वाला भी सहदय बन गया होगा।

Online Teaching With Nikita

भावार्थ पाठ 5 - 'यह दंतुरित मुस्कान' तथा 'फसल' (नागार्जुन) कक्षा 10 हिंदी अ

क्षितिज भाग 2 - पद्य खंड

काव्यांशों का भावार्थ

काव्यांश 2

तुम मुझे पाए नहीं पहचान ?
देखते ही रहोगे अनिमेष!
थक गए हो?
आँखूँ लूँ मैं फेर?
क्या हुआ यदि हो सके परिचित न पहली बार?
यदि तुम्हारी माँ न माध्यम बनी होती आज
मैं न सकता देख
मैं न पाता जान
तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान

भावार्थ

- कवि को बच्चे की मुस्कान मनमोहक लगती है। जब बच्चा पहली बार किसी को देखता है, तो वह अजनबी की तरह उसे घूरता रहता है। इसी कारण कवि बच्चे से कहता है कि तुम मुझे पहचान नहीं पाए हो, इसी कारण लगातार बिना पलक झपकाए अजनबियों की तरह मुझे देख रहे हो।

- कवि बच्चे से कहता है कि इस प्रकार लगातार देखते रहने से तुम थक गए होगे, इसलिए मैं ही तुम्हारी ओर से अपनी आँखें हटा लेता हूँ। यदि तुम मुझे पहली बार में नहीं पहचान सके तो कोई बात नहीं। यदि तुम्हारी माँ तुम्हारा परिचय मुझसे न कराती अर्थात यदि तुम्हारी माँ तुम्हारे और मेरे बीच माध्यम का काम न करती, तो तुम मुझे देखकर हँसते नहीं और मैं तुम्हारे इन नए-नए निकले दाँतों वाली मुस्कान को देखने का सौभाग्य प्राप्त न कर पाता।

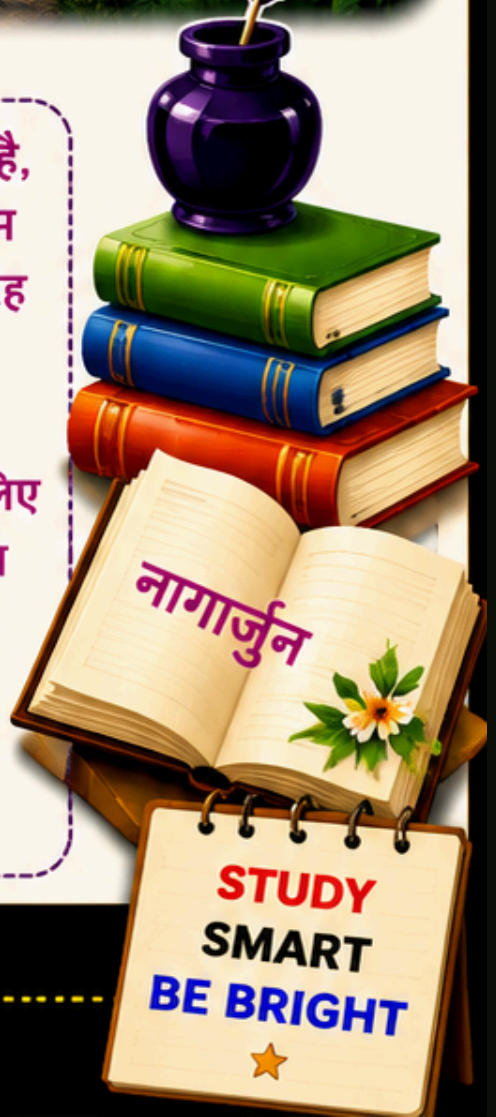

Online Teaching With Nikita

भावार्थ पाठ 5 - 'यह दंतुरित मुस्कान' तथा 'फसल' (नागार्जुन) कक्षा 10 हिंदी अ क्षितिज भाग 2 - पद्य खंड

✿ काव्यांशों का भावार्थ ✿

काव्यांश 3

धन्य तुम, माँ भी तुम्हारी धन्य!
चिर प्रवासी मैं इतर, मैं अन्य!
इस अतिथि से प्रिय तुम्हारा क्या रहा संपर्क
उंगलियाँ माँ की कराती रही हैं मधुपर्क
देखते तुम इधर कनखी मार
और होती जब कि आँखें चार
तब तुम्हारी दंतुरित मुस्कान
मुझे लगती बड़ी ही छविमान!

भावार्थ

✿ कवि बच्चे की मधुर मुस्कान देखकर कहता है कि तुम धन्य हो और तुम्हारी माँ भी धन्य है, जो तुम्हें एक-दूसरे का साथ मिला है। मैं तो सदैव बाहर ही रहा, तुम्हारे लिए मैं अपरिचित ही रहा। मैं एक अतिथि हूँ। हे प्रिय! मुझसे तुम्हारी आत्मीयता कैसे हो सकती है? अर्थात मेरा तुमसे कोई संपर्क नहीं रहा।

✿ तुम्हारे लिए तो तुम्हारी माँ की उँगलियों में ही आत्मीयता है, जिन्होंने तुम्हें पंचामृत पिलाया, इसलिए तुम उनका हाथ पकड़कर मुझे तिरछी नजरों से देख रहे हो। जब तुम्हारी नजरें मेरी नजर से मिल जाती हैं, तब तुम मुस्करा देते हो। उस समय तुम्हारे नए-नए निकले दाँतों वाली मधुर मुस्कान मुझे बहुत ही प्रिय लगती है।

Online Teaching With Nikita

फसल

काव्यांश 1

एक के नहीं, दो के नहीं,
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू;
एक के नहीं, दो के नहीं,
लाख-लाख कवि-कविट हाथों के स्पर्श की गरिमा;
एक की नहीं दो की नहीं,
हजार-हजार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म:

भावार्थ

कवि ने इस बात को स्पष्ट किया है कि लहलहाती फसल को पैदा करने में प्रकृति और मनुष्य दोनों का ही पारस्परिक सहयोग होता है। इसलिए वह कहता है कि फसल को पैदा करने में केवल एक-दो नदियों ही नहीं, अपितु अनेक नदियों अपना जल देकर उसकी सिंचाई करती हैं।
उसमें केवल एक-दो मनुष्यों का ही नहीं, अपितु लाखों-करोड़ों मनुष्यों का परिश्रम मिलता है और उसमें केवल एक-दो खेतों का ही नहीं, अपितु हजार-हजार खेतों की मिट्टी का गुण-धर्म मिलता है, तब खेतों में लहलहाती फसल पैदा होती है। इस प्रकार प्रकृति और मनुष्य दोनों के सहयोग से ही सुग्जन संभव होता है।

काव्यांश 2

फसल क्या है?
और तो कुछ नहीं है वह
नदियों के पानी का जादू है वह
हाथों के स्पर्श की गरिमा है
भूरी-काली-संदली मिट्टी का गुण-धर्म है
त्योहार है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की शिरकन का!

भावार्थ

- कवि ने इस बात को स्पष्ट किया है कि फसल को पैदा करने में प्रकृति और मनुष्य दोनों का ही सहयोग होता है। इसी से सुजन संभव होता है, इसलिए कवि कहता है कि फसल का स्क्यं कोई अस्तित्व नहीं है। वह तो नदियों द्वारा दिए गए उस पानी का जादू है, जिससे फसल की सिंचाई हुई थी। वह तो लाखों-करोड़ों मनुष्यों द्वारा किए गए परिश्रम की गरिमा का फल है।
- वह तो भूरी-काली-संदली मिट्टी का गुण-धर्म है, जिसमें फसल को बोया गया था। वह तो सूरज की किरणों का वरदान हुआ रूप है, जिसके द्वारा फसल को रोशनी मिली। साथ ही इसमें हवा का भी समान सहयोग है। इस प्रकार इन सबके सहयोग से ही खेतों में लहलहाती फसल खड़ी होती है।

Online Teaching With Nikita
STUDY SMART BE BRIGHT